23

तुम अपना मूल्य नहीं जानते

मत्ती 5:13, एक निकट दृष्टि

मैं कल्पना करता हूं कि मैंने नमक और ज्योति को दर्शाने के लिए आपके सामने नमक का एक डिज़्बा और एक मोमबत्ती रखी है। नमक और ज्योति दो ऐसी चीज़ें हैं, जिसे हर देश के लोग इस्तेमाल करते हैं। संसार में कहीं भी चले जाएं, नमक और ज्योति आपको मिल ही जाएंगी।

यीशु के समय में भी यह हर जगह होती थी। एक लड़के के रूप में, यीशु अपनी माता को खाने में नमक डालते और हर शाम छोटे-छोटे दीये जलाते देखता होगा। परन्तु साधारण से लगने वाले नमक और ज्योति का यीशु ने मसीही लोगों को सबसे बड़े अभिनन्दन या सम्मान के रूप में और इनमें से कुछ सबसे बड़ी चुनौतियां ठहराने के लिए इस्तेमाल किया:

> तुम पृथ्वी के नमक हो। परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फैंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।
>
> तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं, परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें (मत्ती 5:13-16)।

पहाड़ी उपदेश में ये शब्द दूसरा मुख्य भाग हैं। मसीह ने अभी-अभी अपने होने वाले चेलों के व्यवहार की रूपरेखा देते हुए, धन्य वचन दिए थे। इसके बाद उसने यह बताते हुए कि "तुम पृथ्वी का नमक हो"; "तुम जगत की ज्योति हो" उस व्यवहार का *प्रभाव* बताया था। शायद मसीही प्रभाव पर बाइबल का यह सबसे बड़ा पद है।

कभी-कभी मैं इस पाठ को "अपने आप को सस्ते में न बेचें" का नाम देता हूं।[1] आपको लग सकता है कि आप महत्वपूर्ण हैं, मैं आपको इस बारे में कुछ बताना चाहता हूं: नमक और ज्योति बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। बिना नमक और ज्योति के जीवन नहीं चल

सकता। शारीरिक देह को कार्य करने के लिए नमक आवश्यक है,[2] और बिना ज्योति के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि सूरज अचानक खत्म हो जाए, तो कुछ ही घण्टों में हमारी पृथ्वी बर्फ से ढक जाएगी। जब यीशु ने कहा कि मसीही के रूप में आप नमक और ज्योति हैं, तो वह यह कह रहा था कि आप बहुत ही महत्वपूर्ण हैं–और यह कि उसके उद्देश्यों को आपके बिना पूरा नहीं किया जा सकता।

हर व्यक्ति का अपना प्रभाव होता है, आपका अपना प्रभाव है। जैसे छोटे से छोटे बॉल की परछाईं होती है, जैसे छोटे से छोटे पत्थर को फैंकने से पानी पर लकीरें पड़ जाती हैं, वैसे ही आपका भी प्रभाव है और यीशु चाहता है कि उस प्रभाव का इस्तेमाल उसके लिए किया जाए।

आइए अब यह देखने के लिए कि प्रभु के लिए आपका क्या महत्व है, बाइबल के अपने पाठ में चलते हैं। इस प्रवचन में, हम पृथ्वी का नमक होने पर चर्चा करेंगे जबकि अगले पाठ में हम जगत की ज्योति होने पर बात करेंगे।[3]

एक सज़्मान

''तुम पृथ्वी का नमक हो,'' के सबसे पहले तो यीशु के शब्द एक सज़्मान थे। यहीं पर हमें यह बात मिलती है कि ''वह पृथ्वी का नमक है।''[4]

यीशु ने यह सज़्मान यहूदी धार्मिक अगुओं या रोमी शासकों या अथेने के दार्शनिकों को नहीं दिया, बल्कि अपने सुनने वालों को अर्थात किसानों, मछुआरों, व्यापारियों, उनकी पत्नियों और बच्चों को दिया। उसने उन्हें सज़्मान दिया जिन्हें संसार ''साधारण लोग'' कहता है।

''तुम पृथ्वी का नमक हो'' वाक्य पृथ्वी के बारे में तो कुछ कहता ही है, यह मसीह के अनुयायियों के बारे में भी कुछ कहता है। इन शब्दों के महत्व को समझने के लिए, हमें बाइबल के समयों में नमक की भूमिका को समझना होगा।

नमक मूल्यवान होता था

यीशु के समय में नमक का महत्व होता था। इसका इस्तेमाल प्राय: विनिमय या मजदूरी देने के रूप में किया जाता था। यहीं से यह अभिव्यक्ति मिली कि ''उसने नमक खाकर हराम नहीं किया।''[5]

यीशु ने कहा, ''तुम पृथ्वी का नमक हो''–और नमक का महत्व होता है। इसमें पृथ्वी के बारे में क्या कहा गया है? इसमें कहा गया है कि इस पृथ्वी का कोई वास्तविक मूल्य नहीं। मसीही लोगों के बारे में क्या कहा गया है? कहा गया है कि मसीही लोगों का मूल्य है–और इस संसार का जो भी महत्व है, वह मसीही लोगों के होने से ही है।

यदि आप मसीही हैं, तो परमेश्वर की नज़र में आपका महत्व है। अपने आप को सस्ते में न बेचें।

नमक का स्वाद होता था

आज की तरह, उस ज़माने में भी नमक का एक इस्तेमाल भोजन का स्वाद बढ़ाने के लिए होता था। अय्यूब ने पूछा था, ''जो फीका है वह ज़्या बिना नमक खाया जाता है? ज़्या अण्डे की सफेदी में भी कुछ स्वाद होता है?'' (अय्यूब 6:6)। फिर इस पुरखे ने नमकरहित भोज को ''घिनौना'' (आयत 7) कहा था।[6]

नमक के महत्व को दर्शाने के लिए नीचे दी गई कहानी एक उदाहरण है:

> एक राजा ने अपनी तीन बेटियों से पूछा कि वे उससे कितना प्रेम करती हैं। उनमें से दो ने उज़र दिया कि वे उससे संसार भर के सारे सोने और चांदी से अधिक प्रेम करती हैं। जबकि सबसे छोटी वाली ने कहा कि वह उसे नमक से भी अधिक चाहती है। राजा अपने आप को नमक के साथ मिलाने के उसके उज़र से प्रसन्न नहीं हुआ। परन्तु रसोइये ने उसकी टिप्पणी को सुनकर अगली सुबह नाश्ते में किसी चीज़ में नमक नहीं डाला, जिस कारण खाना इतना स्वादहीन बना कि राजा को पसन्द नहीं आया। तब उसे अपनी बेटी की बात का अर्थ समझ आया। वह उससे इतना प्रेम करती थी कि उसे उसके बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता था।[7]

''नमक रहित'' खाना खाकर जीने वाले लोग कोशिश करते रहते हैं कि किसी प्रकार बिना नमक डाले खाने का स्वाद बढ़ा सकें। इसमें नमक के कई विकल्प सहायक होते हैं, परन्तु ''चुटकी भर नमक'' जितना असरदार और कोई नहीं हो सकता है।

''तुम पृथ्वी का नमक हो''–और नमक स्वाद को बढ़ाता है। इसमें पृथ्वी के बारे में ज़्या संदेश है? इसमें संदेश है कि यह पृथ्वी स्वादहीन है और अन्त में इस संसार की हर चीज़ स्वादहीन हो जाएगी। एक मसीही के रूप में यह आपके बारे में ज़्या कहती है? यह कहती है कि आप वही हैं, जो जीवन को स्वादिष्ट बनाता है। अपने आप को सस्ते में न बेचें।

नमक कई काम आता था

नमक के महत्व के बारे में काफ़ी कुछ कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए, नमक प्यास बढ़ाता है। आपने सुना होगा ''घोड़े को पानी तक तो ले जाया जा सकता है, परन्तु उसे पानी पीने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।''[8] इस बात में एक और चीज़ जोड़ी जानी चाहिए: ''... परन्तु उसे नमक नहीं खिलाया जा सकता।'' जब मैं लड़का था, तो पशु मेलों में जानवरों को दिखाते समय मैं ऐसा ही करता था। यदि प्रदर्शन के लिए मेरा कोई जानवर मरियल सा लगता, तो मैं उसके खाने में थोड़ा सा नमक डाल देता था। इससे वह अधिक पानी पीकर मोटा लगता था। यह बात हम पर भी लागू हो सकती है: मसीहियों के रूप में, हम अपने जीवन से जीवन के जल के लिए अपनी प्यास बढ़ा सकते हैं (यूहन्ना 4:10–15)।

इसके अलावा, यीशु के समय में नमक का इस्तेमाल कभी-कभी एक चिह्न के रूप में भी किया जाता था। फिर इसे यहूदी बलिदानों में भी मिलाया जाता था (लैव्यव्यवस्था

2:13)। इन सब बातों से यही पता चलता है कि मसीही लोगों का कितना महत्व है।

नमक का इस्तेमाल चीज़ों को सुरक्षित रखने के लिए किया जाता था

बाइबल के समयों में नमक का इस्तेमाल सञ्भवतया सबसे अधिक आवश्यक था और इससे इसका महत्व और भी बढ़ गया, ज़्योंकि इसका इस्तेमाल चीज़ों को खराब होने से बचाने के लिए किया जाता था। उस ज़माने में मीट को ठण्डा और ताज़ा रखने के लिए बाजार से फ्रिज या फ्रीज़र नहीं लाए जा सकते थे। ताज़ा मीट जल्दी ही खराब हो जाता था ज़्योंकि मीट का यही स्वभाव है।[9]

मेरी युवा अवस्था में मेरे परिवार के लोग मुझे एक बार सचमुच छुट्टियों में कहीं घुमाने ले गए जो मुझे याद है। (कभी-कभी हम रिश्तेदारों के पास चले जाते थे तो मैं उन्हें छुट्टियां नहीं मानता था।) इस बार, हम कार में बैठकर पूर्वी ओज़्लाहोमा और आरकैंसा से होते हुए पूर्व की ओर गए। जब हम बाहर गए हुए थे, तो गैस कञ्पनी ने पाइपों की मरञ्मत के लिए गैस की सप्लाई बन्द कर दी और हमारे घर आने पर फ्रिज में से मीट की बदबू आ रही थी। हमारा फ्रिज गैस वाला था। मेरी मां ने फ्रिज में से बदबू निकालने के लिए जो भी वह कर सकती थी, किया। उस दुर्गन्ध से पीछा छुड़ाने के लिए कई हफ़्तों तक हमारा फ्रिज पीछे आंगन में पड़ा रहा। जब तक हमारे पास यह फ्रिज रहा, उसमें से बदबू आती ही रही।

मेरे एक दोस्त का छोटा लड़का था, जिसका नाम गैरी था। जब वह घर में अकेला था, तो उसने ट्यूना (समुद्री मछली) का सैंडविच बनाने का विचार किया। मछली का कैन खोलते समय उसके हाथ से गिर गया, जिससे मछली का तेल पूरे गलीचे पर फैल गया। गैरी नहीं चाहता था कि उसके माता-पिता को यह पता चले कि ज़्या हुआ है, सो उसने स्टोर में से वैज़्यूम ज़्लीनर निकाला और मछली के तेल को साफ़ कर दिया। फिर उसने उस ज़्लीनर को वापस स्टोर में रख दिया। कई दिनों बाद, एक रहस्यमयी, गन्दी सी बदबू घर में फैल गई, जब तक पता न चला कि वह कहां से आ रही थी।

आप जानते हैं कि मैं ज़्या कहना चाहता हूं कि मीट इतनी जल्दी खराब हो जाता है। बिना विशेष तैयारी के मीट यूं ही ताज़ा नहीं रहता।

बाइबल के समयों में मीट को खराब होने से बचाने के लिए लोग ज़्या करते थे? वे इसमें नमक लगा देते थे। मछुआरे मछली में नमक डाल देते थे। ऐसा नहीं है कि लोगों को नमक इतना स्वादिष्ट लगता था; बल्कि वे नमक इसलिए डालते थे, ताकि मीट को खराब होने से बचाया जा सके।[10] आप में से भी कइयों ने कभी मीट काटकर, खराब होने से बचाने के लिए उस पर नमक लगाया होगा।[11]

''तुम पृथ्वी का नमक हो''-और नमक चीज़ों को खराब होने से बचाने के काम आता है। पृथ्वी के बारे में यह आयत ज़्या कहती है? यह कहती है कि यह पृथ्वी खराब हो रही है अर्थात सड़ रही है, गल रही है। संसार के बारे में हमारी यही समझ है। दिखने में चाहे यह कितना भी चमकदार हो, पर वास्तव में यह हमारी आंखों के सामने मर रहा

और विघटन की ओर जा रहा है। इस संसार का चेहरा बड़ा सुन्दर लगता है; परन्तु यदि आप गौर से देखें, तो यह सब मेक-अप ही है। भड़कीले रंगों के पीछे झुर्रियों की वास्तविकता छिपी हुई है।

यह सच्चाई कोई भी व्यक्ति देख सकता है, चाहे उसे बाइबल का कितना ही कम ज्ञान ज़्यों न हो। आंकड़ों की आवश्यकता नहीं है।[12] आप संसार के गिर रहे नैतिक मूल्यों को देख लें, ईमानदारी और निष्ठा की कमी तथा आत्मिक बातों में दिलचस्पी की भारी कमी है। इस संसार की कोई भी बात उस व्यक्ति को, जो उस मेक-अप के नीचे देखता है, आकर्षित नहीं कर सकती।

इसके विपरीत, यह मसीही लोगों के बारे में ज़्या कहती है ? यह कहती है कि मसीही लोग इस पृथ्वी को सज़्भालकर रखने वाली शक्ति हैं।

अपने जीवनकाल में, मैंने इस पृथ्वी की आशा और उद्धार के रूप में विज्ञान, शिक्षा, मनोविज्ञान और मनोरोग विज्ञान, तकनीक, बेहतर सुविधाओं, कानून बनाने, सामाजिक सुधार तथा सैन्य शक्ति उसे कई कारकों का महत्व है। मनुष्य ने इन सभी क्षेत्रों में बहुत उन्नति कर ली है, लेकिन कुछ में तो विशेषकर बहुत से में संसार बद से बदतर होता जा रहा है। यीशु ने कहा कि संसार की एकमात्र वास्तविक आशा विश्वासी मसीही हैं।

जिस प्रकार थोड़ा सा नमक मीट के काफ़ी बड़े टुकड़े को खराब होने से बचा सकता है, वैसे ही कुछ समर्पित मसीही समाज को बचा सकते हैं। आपको अब्राहम और सदोम और अमोरा के विनाश की कहानी याद है (उत्पत्ति 18) ? दस-केवल दस-धर्मी लोगों से सदोम और अमोरा का बचाव हो सकता था (आयत 32)। मान लीजिए कि कोई सदोम और अमोरा के चैज़्बर ऑफ़ कॉमर्स[13] में जा रहा है और कहता है, ''आप की अभी तक की जो प्राप्ति है, वह ज़बर्दस्त है; परन्तु यदि आप इन नगरों को एक दिन और देखना चाहते हैं, तो अच्छा होगा कि पुराने समय में अब्राहम वाली कहानी की तरह पहाड़ पर दस भले लोग हों।'' उन्होंने ज़्या जवाब दिया होगा ? उनके व्यवहार के बावजूद, अब्राहम जैसे दस लोग उन नगरों को बचा *लेते*।

आइए एक तुलना का अनुमान लगाने के लिए रुकते हैं। ज्योति (जिसकी हम अपने अगले प्रवचन में बात करेंगे) उसे प्रभावित करती है, जो यह *करती* है, जबकि नमक उसे प्रभावित करता है जो यह *है*। आपने सुरक्षित रखने के इसके गुण को घरों में भी देखा होगा। आइए यह कहते हैं कि आप परमेश्वर की विश्वासी सन्तान हैं (और मुझे आशा है कि आप हैं)। आप अपने मसीही होने पर इतराते नहीं हैं, परन्तु लोग जानते हैं कि आप कौन हैं और आपका उद्देश्य ज़्या है। कमरे में आपके आने पर भाषा और चुटकुलों का सज़्य होना नई बात नहीं है। लोग आपको परेशान करने की कोशिश कर सकते हैं: ''हम वह कहानी नहीं बता सकते। ज़्या नाम है, उसका वह यहीं है!'' आप की उपस्थिति-आपकी उपस्थिति का *तथ्य ही*-फर्क कर देता है। नमक अपने प्रभाव से ही प्रभावित करता है।

फिर, मैं यह ज़ोर देता हूं कि यीशु ने यह बात उनके लिए कही, जिन्हें संसार ''साधारण'' लोग मानता है। मूल भाषा में, ''तुम'' शज़्द पर ज़ोर दिया गया है:[14] यीशु ने

कहा, ''*तुम* पृथ्वी का नमक हो।'' उसकी बात अन्तर्भूत भी है और एकमात्र भी: इसमें उसके सब अनुयायी शामिल हैं और यह उसके अनुयायियों के अलावा दूसरे हर व्यक्ति को निकाल देती है। याद रखें कि यीशु ने यह बात अपने समय के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक अगुओं से नहीं, बल्कि ''साधारण'' अर्थात अपने पीछे चलने को तैयार पृथ्वी-के-नमक बनने वालों से कही।

अपने आप को सस्ते में न बेचें। यदि आप मसीही हैं, तो आप बहुत ही विशेष हैं!

एक चुनौती

यीशु का यह कहना कि ''तुम पृथ्वी का नमक हो,'' केवल एक सज़्मान ही नहीं बल्कि चुनौती भी थी। नमक का महत्व है और इसमें चीज़ों को सज़्भालकर रखने की क्षमता है, *ज़्योंकि इसमें एक विलक्षण गुण है*। मसीही लोगों के रूप में, हम में भी विलक्षण गुण होना आवश्यक है। इस गुण को व्यज़्त करने का एक ढंग यह कहना है कि हमें संसार से *अलग* होना आवश्यक है।

> और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुज़्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुज़्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, ... (रोमियों 12:2)।
>
> ... ज़्या तुम नहीं जानते, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है (याकूब 4:4)।
>
> तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है (1 यूहन्ना 2:15)।

यदि नमक भी उसी चीज़ का बना होता, जिससे मीट बनता है, तो इससे मीट को खराब होने से बचाया नहीं जा सकता था। यदि हम संसार के जैसे हैं, तो हम में संसार को बचाये रखने का गुण नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें अलग ही होना चाहिए,[15] परन्तु इसका यह अर्थ अवश्य है कि हमें सबसे हटकर होना आवश्यक है।

ज़्या हमें देखकर लोगों को लगता है कि हम मसीही हैं-हमारे कामों से, हमारे चाल चलन से, हमारी बातों से, हमारे वस्त्रों से और समस्याओं से निपटने के हमारे ढंग से? मसीही होने के नाते यह प्रभाव होना आवश्यक है कि हम अपने परिवारों से कैसे व्यवहार करते हैं, दुकानदार से कैसे बात करते हैं, और खेलों में कैसे खेलते हैं।

ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा कि ''तुम *कलीसिया* के नमक हो,'' बल्कि उसने यह कहा कि ''तुम *पृथ्वी* के नमक हो।'' मतों से संकेत मिलता है कि कलीसिया के अधिकतर काम चर्च बिल्डिंगों में ही होते हैं। हमें वहां ''नमक'' होना आवश्यक है, जहां लोग रहते हैं अर्थात बाज़ार में, स्कूल में, दज़्तर में। यीशु पापियों का मित्र था (मज़ी 11:19)।

आउट ऑफ द साल्ट शेकर एण्ड इनटू द वर्ल्ड[16] नामक एक पुस्तक में मसीही लोगों से समाज में शामिल होने का आग्रह किया गया है, जहां वे दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकें।

आप जहां भी जाएं, जहां भी रहें, आपको परमेश्वर की खराब होने से बचाने वाली सामर्थ बनने की आज्ञा दी गई है। परमेश्वर की सन्तान के रूप में आप किसी के घर में, दूसरी जगहों पर जाकर लोगों से सज़्पर्क करते होंगे। आपके लिए परमेश्वर की और प्रभाव की विशेष जगह यही है। ''पृथ्वी का नमक'' बनने की चुनौती को कभी न भूलें।

आयत 13 के अन्तिम भाग में, यीशु ने इस चुनौती की गज़्भीरता पर ज़ोर दिया: ''... परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फैंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।'' KJV में नमक के अपना ''स्वाद'' खोने की बात है। द NIV में ''यदि नमक अपना नमकीनपन खो दे, तो इसे दोबारा नमकीन कैसे किया जा सकता है?''

हो सकता है कि हम में से कई लोगों को यह समझ न आए कि नमक अपना स्वाद और नमकीनपन कैसे खोता है, ज़्योंकि हम तो बाज़ार से शुद्ध सफेद नमक खरीदते हैं। वह नमक नमकीन ही होता है। उसका एक-एक कण भी नमकीन ही होता है। परन्तु बाइबल के समयों में नमक समुद्र के पानी को सुखाकर बनाया जाता था। नमक में प्राकृतिक तौर पर कई अशुद्धताएं होती हैं। मोटे नमक को यदि जमीन पर रगड़ा जाए, तो कुछ रेत या मिट्टी इसमें मिली हुई मिलती है। यदि उस से निकले नमकीन कणों को तत्वों से निकाला जाए, तो अधिकतर सोडियम ज़्लोराइड[17] निकल सकता है। जो कुछ बचेगा, उसमें इतना नमक होगा कि उससे पृथ्वी को जीवाणुरहित किया जा सकता है, परन्तु उसका अपना कोई महत्व नहीं है। यह ''नमक'' अपने गुण को खो चुका है।

पलिश्तीन देश में अच्छी भूमि काफी महंगी होती है। फसलों की उपज के लिए वे उपलज़्ध एक-एक इंच जमीन का इस्तेमाल करते थे। किसान खेतों में छोटे-छोटे तंग रास्ते बनाते थे। लोग खेत में ऐसा नमक फैंकने का साहस नहीं करते थे ''जो नमकहीन'' हो चुका हो, ज़्योंकि उससे भूमि का उपजाऊपन नष्ट हो जाता था। (मुझे यह सबक बड़ी मुश्किल से तब समझ आया, जब मैंने घर में आइसक्रीम बनाने के लिए इस्तेमाल के बाद बेकार नमकीन बर्फ और पानी को बगीचे में डाल दिया।) इसके विपरीत, वे तो मार्गों में नमक के तोंदे फैंक देते थे, जहां इससे कोई हानि नहीं पहुंचती। वहां इसे ''मनुष्यों के पांवों तले रौंदा जाता'' था।

यह उदाहरण उस मसीही की यीशु द्वारा दुखद व्याज़्या है, जो ''पृथ्वी का नमक'' होने की अपनी क्षमता को समझने का प्रयास नहीं करता। उसका स्पष्ट निष्कर्ष यह है कि ऐसा व्यज़्ति ''किसी काम का नहीं'' है।

सारांश

नमक और ज्योति: ये साधारण सी चीज़ें यीशु द्वारा अमूल्य सबक सिखाने के लिए

इस्तेमाल में लाई गई हैं। अगले प्रवचन में हम ''ज्योति'' बनने पर अध्ययन करेंगे; अभी के लिए, मुझे आशा है कि हम सब पर ''तुम पृथ्वी का नमक हो'' शब्दों का असर हुआ। यीशु ने ये शब्द कहकर हमें बहुत बड़ा सम्मान दिया है। प्रभु की नज़र में हम विशेष लोग हैं अर्थात हमारा महत्व है। हमें चाहिए कि अपने आप को सस्ते में न बेचें।

उसने हमें एक बहुत बड़ी चुनौती भी दी है। किसी के लिए यह कहने से बड़ा अपमान कोई नहीं हो सकता कि वह ''किसी काम का नहीं।'' आत्मिक तौर पर मैं ''किसी काम का नहीं'' नहीं सुनना चाहता, क्या आप सुनना चाहते हैं? आइए हम एक विलक्षण जीवन जीने का निश्चय कर लें, जो संसार से अलग हो। ''पृथ्वी का नमक'' बनने में परमेश्वर हमारी सहायता करे![18]

टिप्पणियां

[1]''सस्ते में बेचना'' किसी चीज़ को बहुत कम दाम में बेचना है। जब कोई व्यक्ति ''अपने आप को सस्ते में बेचता'' है तो वह अपना वास्तविक मूल्य नहीं जानता। एक मसीही व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह ''जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर अपने आप को न समझे'' (रोमियों 12:3)। इसके साथ ही, उसे यह नहीं मान लेना चाहिए कि वह बेकार है। हमारा मूल्य व्यक्तिगत योग्यता से नहीं, बल्कि उस मूल्य से मिलता है, जो *परमेश्वर* ने हमारा ठहराया है। यदि आपके यहां ''सस्ते में बेचना'' वाक्यांश से लोग परिचित न हों, तो इससे मिलते-जुलते अर्थ वाला वाक्यांश इस्तेमाल करें, जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों। [2]लहू का प्रवाह मूलत: एक नमकीन घोल है। कई मरीजों को डॉक्टरों द्वारा नमक से परहेज रखने के लिए कहा जाता है। परन्तु कई बार तथाकथित, ''नमक रहित'' खानों में थोड़ा बहुत नमक होता ही है। [3]साधारणतया, इस शृंखला में मैंने एक-दूसरे से मिलते-जुलते एक पाठ का, परन्तु कभी-कभी दो पाठों का इस्तेमाल किया है। इनमें से एक रविवार सुबह और दूसरा रविवार शाम को या मण्डली के किसी और समय इकट्ठा होने पर सुनाया जा सकता है। [4]यह सहायक अभिव्यक्ति अपनी व्याख्या स्वयं करती है। यदि आपके यहां लोग इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल नहीं करते, तो आप इस प्रकार समझा सकते हैं, ''संसार के कुछ भागों में, सबसे बड़े सम्मान के रूप में आप किसी को कह सकते हैं, 'वह पृथ्वी का नमक है।' '' [5]यदि आपके यहां इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल नहीं होता, तो इसे वैसे ही इस्तेमाल करें जैसे ''वह पृथ्वी का नमक है'' अभिव्यक्ति में किया गया। (पिछली टिप्पणी देखें।) [6]अय्यूब कह रहा था कि उसके ''मित्रों'' की ''सात्वना'' नमक रहित खाने की तरह थी। नमक के स्वाद को बढ़ाने से सम्बन्धित एक और पद कुलुस्सियों 4:6 है, जो कहता है कि हमारी बोलचाल ''सलोनी'' होनी चाहिए। हमें अपनी बोलचाल को स्वादिष्ट बनाने की कोशिश करते रहना चाहिए। [7]ए. सी. डिक्सन, लैसली जी. थॉमस, *द सरमन ऑन द माउंट: ए सीरीज़ ऑफ़ स्टडीज़ इन द मौरल एण्ड रिलिजियस टीचिंग्स ऑफ़ जीज़स* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1958), 22. [8]इस अभिव्यक्ति का अर्थ है, ''किसी से ज़बर्दस्ती कोई काम नहीं करवाया जा सकता।'' [9]यदि आपने मीट को खराब होते देखा हो, तो उस कहानी को अपने श्रोताओं को बताएं। [10]मीट को खराब होने से बचाने का एक और ढंग इसे सुखा लेना है। सूखा मीट, मीट के न होने से अच्छा था।

[11]अमेरिका के कुछ भागों और अन्य कई स्थानों में, आज भी यही ढंग अपनाया जाता है। [12]तो भी संसार के जिस भाग में आप रहते हैं, आपको वहां के आंकड़े देने *चाहिए*: आंकड़े जिनसे आपके आस-पास के संसार की बढ़ती हुई अभक्ति का पता चलता हो। [13]अमेरिका में, अधिकतर नगरों में चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स होता है, जो उस क्षेत्र के व्यापारी तथा अन्य प्रभावशाली लोगों का एक संगठन है। यद्यपि यह कोई

प्रबन्धकीय समूह नहीं है, परन्तु इससे उस क्षेत्र के विकास तथा समृद्धि को बहुत बढ़ावा मिलता है। [14]यूनानी में दूसरी क्रियाओं की तरह, मत्ती 5:13 की ''क्रिया'' में विषय को समझा जा सकता है (इस मामले में, ''तुम'') वाक्य के आरम्भ में ''तुम'' के लिए यूनानी शब्द का *जुड़ना* उस शब्द पर ज़ोर देने का असर है। [15]चाहें तो आप अपने समाज के किसी भाग के अजीब व्यवहार और/या वस्त्र का उदाहरण दे सकते हैं। जब मैं इस पाठ को सुना या करता था, तो उस समय लोगों को अकड़े हरे बाल रखने का शौक था; मेरे बहुत से सुनने वालों ने टीवी पर ऐसे लोगों को देखा था। मैंने कहा, ''इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें हरे रंग के तीखे लम्बे बाल रखने चाहिए; इसका अर्थ यह है कि हमें उनसे अलग दिखना चाहिए।'' [16]रिबेका मैनले पिपर्ट, *आउट ऑफ़ द साल्ट शेकर एण्ड इन टू द वर्ल्ड* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1979)। [17]सोडियम ग्लोराइड वैज्ञानिक भाषा में साधारण नमक को ही कहा जाता है। [18]इस प्रवचन का इस्तेमाल करने के लिए आपको चाहिए कि अपने सुनने वालों को सही प्रकार का प्रभाव रखने के लिए जो भी आवश्यक हो, उसे करने के लिए प्रोत्साहित करें। कइयों को विश्वास करके बपतिस्मे के द्वारा मसीही बनने की आवश्यकता हो सकती है (मरकुस 16:16)। अविश्वासी मसीहियों को मन फिराकर, अंगीकार तथा प्रार्थना के द्वारा घर वापसी करने की आवश्यकता हो सकती है (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।